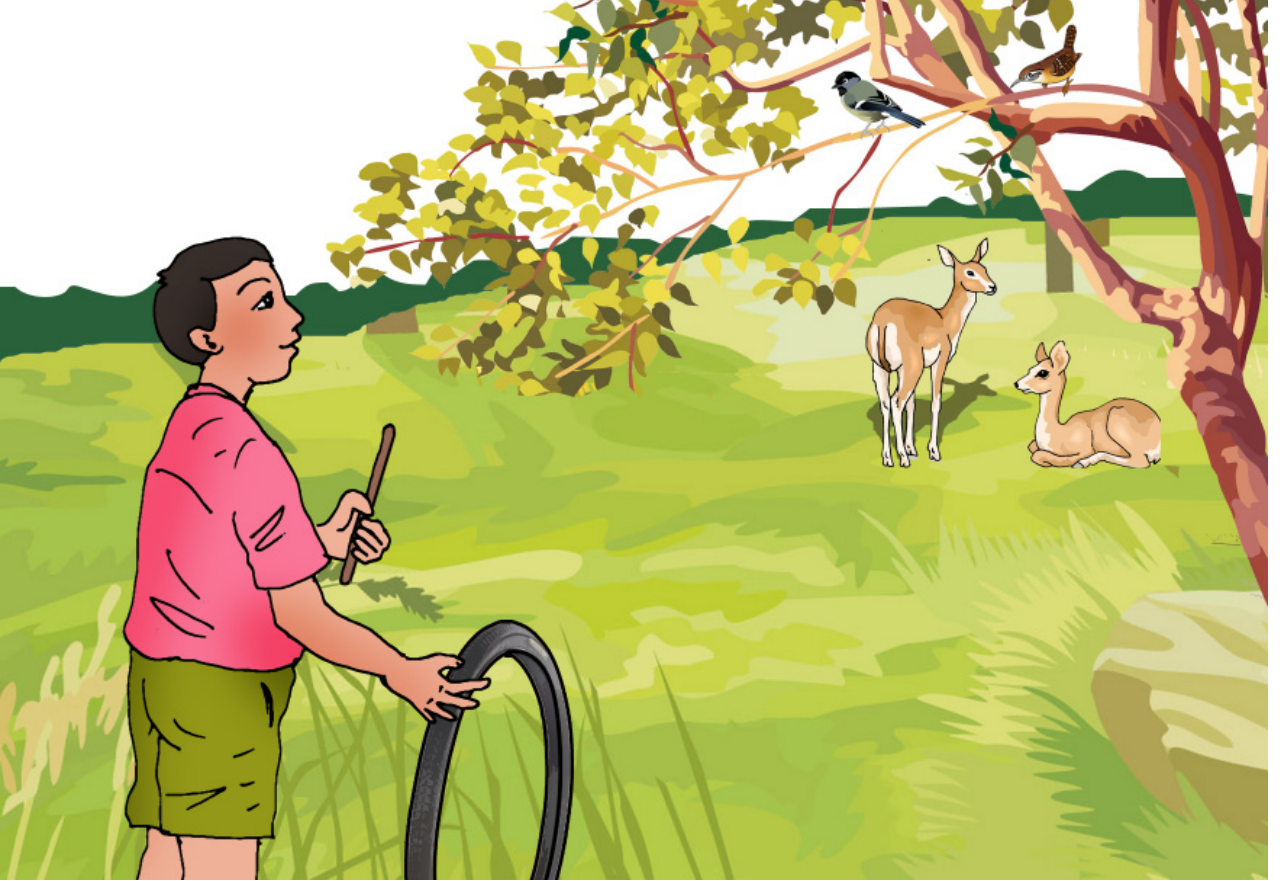


त्रयोदशः पाठः

## भ्रान्तो बालकः



प्रस्तुत पाठ 'संस्कृत प्रौढपाठावलिः' नामक ग्रंथ से सम्पादित कर लिया गया है। इस कथा में एक ऐसे बालक का चित्रण है, जिसका मन अध्ययन की अपेक्षा खेल-कूद में लगा रहता है। यहाँ तक कि वह खेलने के लिए पशु-पक्षियों तक का आवाहन करता है किन्तु कोई उसके साथ खेलने के लिए तैयार नहीं होता। इससे वह बहुत निराश होता है। अन्ततः उसे बोध होता है कि सभी अपने-अपने कार्यों में व्यस्त हैं। केवल वही बिना किसी काम के इधर-उधर घूमता रहता है। वह निश्चय करता है कि अब व्यर्थ में समय गँवाना छोड़कर अपना कार्य करेगा।



भ्रान्तः कश्चन बालः पाठशालागमनवेलायां क्रीडितुं निर्जगाम। किन्तु तेन सह केलिभिः कालं क्षेप्तुं तदा कोऽपि न वयस्येषु उपलभ्यमान आसीत्। यतस्ते सर्वेऽपि पूर्वदिनपाठान् स्मृत्वा विद्यालयगमनाय त्वरमाणा बभूवुः। तन्द्रालुर्बालो लज्जया तेषां दृष्टिपथमपि परिहरन्नेकाकी किमप्युद्यानं प्रविवेश।

स चिन्तयामास— विरमन्त्वेते वराकाः पुस्तकदासाः । अहं पुनरात्मानं विनोदयिष्यामि । ननु भूयो द्रक्ष्यामि क्रुद्धस्य उपाध्यायस्य मुखम् । सन्त्वेते निष्कुटवासिन एव प्राणिनो मम वयस्या इति ।

अथ स पुष्पोद्यानं व्रजन्तं मधुकरं दृष्ट्वा तं क्रीडाहेतोराह्वयत् । स द्विस्त्रिरस्याह्वानमेव न मानयामास । ततो भूयो भूयः हठमाचरति बाले सोऽगायत्—वयं हि मधुसंग्रहव्यग्रा इति ।

तदा स बालः 'कृतमनेन मिथ्यागर्वितेन कीटेन' इत्यन्यतो दत्तदृष्टिश्चटकमेकं चञ्च्वा तृणशलाकादिकम् आददानमपश्यत् । उवाच च — "अयि चटकपोत! मानुषस्य मम मित्रं भविष्यसि ? एहि क्रीडावः । त्यज शुष्कमेतत् तृणम् स्वादूनि भक्ष्यकवलानि ते दास्यामि" इति । स तु 'नीडः कार्यो बटद्रुशाखायां तद्यामि कार्येण' इत्युक्त्वा स्वकर्मव्यग्रो बभूव ।

तदा खिन्नो बालकः एते पक्षिणो मानुषेषु नोपगच्छन्ति । तदन्वेषयाम्यपरं मानुषोचितं विनोदयितारमिति परिक्रम्य पलायमानं कमपि श्वानमवालोकयत् । प्रीतो बालस्तमित्थं सम्बोधयामास रे मानुषाणां मित्र! किं पर्यटसि अस्मिन् निदाघदिवसे? आश्रयस्वेदं प्रच्छायशीतलं तरुमूलम् । अहमपि क्रीडासहायं त्वामेवानुरूपं पश्यामीति । कुक्कुरः प्रत्याह —

**यो मां पुत्रप्रीत्या पोषयति स्वामिनो गृहे तस्य  
रक्षानियोगकरणान्न मया भ्रष्टव्यमीषदपि ।। इति ।**

सर्वैरेवं निषिद्धः स बालो विघ्नितमनोरथः सन्—'कथमस्मिन् जगति प्रत्येकं स्व—स्वकृत्ये निमग्नो भवति । न कोऽप्यहमिव वृथा कालक्षेपं सहते । नम एतेभ्यः यैर्मे तन्द्रालुतायां कुत्सा समापादिता । अथ स्वोचितमहमपि करोमि इति विचार्य त्वरितं पाठशालामुपजगाम ।

ततः प्रभृति स विद्याव्यसनी भूत्वा महतीं वैदुषीं प्रथां सम्पदं च लेभे ।

### शब्दार्थः

|                 |   |                   |
|-----------------|---|-------------------|
| भ्रान्तः        | — | भ्रमित            |
| क्रीडितुम्      | — | खेलने के लिए      |
| निर्जगाम        | — | निकल गया          |
| केलिभिः         | — | खेल द्वारा        |
| कालं क्षेप्तुम् | — | समय बिताने के लिए |
| त्वरमाणाः       | — | शीघ्रता करते हुए  |
| तन्द्रालुः      | — | आलसी              |

|                   |   |                               |
|-------------------|---|-------------------------------|
| दृष्टिपथम्        | — | निगाह                         |
| चिन्तयामास        | — | सोचा                          |
| पुस्तकदासाः       | — | पुस्तकों के गुलाम             |
| उपाध्यायस्य       | — | गुरु के                       |
| निष्कुटवासिनः     | — | वृक्ष के कोटर में रहने वाले   |
| क्रीडाहेतोः       | — | खेलने के निमित्त              |
| आह्वानम्          | — | बुलावा                        |
| हठमाचरति          | — | हठ करने पर                    |
| मधुसंग्रहव्यग्राः | — | पुष्प के रस के संग्रह में लगे |
| भूयो भूयः         | — | बार—बार                       |
| मिथ्यागर्वितेन    | — | झूठे गर्व वाले                |
| चटकम्             | — | चिड़िया                       |
| चञ्च्वा           | — | चोंच से                       |
| आददानम्           | — | ग्रहण करते हुए को             |
| स्वादूनि          | — | स्वादयुक्त                    |
| भक्ष्यकवलानि      | — | खाने के लिए उपयुक्त कौर       |
| स्वकर्मव्यग्रः    | — | अपने कार्यों में संलग्न       |
| अन्वेषयामि        | — | खोजता हूँ                     |
| विनोदयितारम्      | — | मनोरंजन करने वाले को          |
| पलायमानम्         | — | भागते हुए                     |
| अवलोकयत्          | — | देखा                          |
| बटद्रुशाखायां     | — | बरगद के पेड़ की शाखा पर       |
| सम्बोधयामास       | — | सम्बोधित किया                 |
| निदाघदिवसे        | — | गर्मी के दिन में              |

|                  |   |                                |
|------------------|---|--------------------------------|
| केलीसहायम्       | – | खेल में सहयोगी                 |
| अनुरूपम्         | – | उपयुक्त                        |
| कुक्कुरः         | – | कुत्ता                         |
| रक्षानियोगकरणात् | – | रक्षा के कार्य में लगे होने से |
| भ्रष्टव्यम्      | – | हटना चाहिए                     |
| ईषदपि            | – | थोड़ा-सा भी                    |
| निषिद्धः         | – | मना किया गया                   |
| विघ्नितमनोरथः    | – | टूटी इच्छाओं वाला              |
| कालक्षेपम्       | – | समय बिताना                     |
| तन्द्रालुतायाम्  | – | आलस्य में                      |
| कुत्सा           | – | घृणाभाव                        |
| विद्याव्यसनी     | – | विद्या में रत रहने वाला        |
| प्रथाम्          | – | ख्याति, प्रसिद्धि              |

### अभ्यासः

1. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत।

- (क) बालः कदा क्रीडितुं निर्जगाम ?
- (ख) बालस्य मित्राणि किमर्थं त्वरमाणा बभूवुः ?
- (ग) मधुकरः बालकस्य आह्वानं केन कारणेन न अमन्यत ?
- (घ) बालकः कीदृशं चटकम् अपश्यत् ?
- (ङ.) बालकः चटकाय क्रीडनार्थं कीदृशं लोभं दत्तवान् ?

(च) खिन्नः बालकः श्वानं किम् अकथयत् ?

(छ) विघ्नितमनोरथः बालः किम् अचिन्तयत् ?

**2. निम्नलिखितस्य श्लोकस्य भावार्थं मातृभाषया लिखत।**

यो मां पुत्रप्रीत्या पोषयति स्वामिनो गृहे तस्य।

रक्षानियोगकरणान्न मया भ्रष्टव्यमीषदपि।।

**3. "भ्रान्तो बालः" इति कथाया सारांशं मातृभाषया लिखत।**

**4. स्थूलपदान्यधिकृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत।**

(क) स्वादूनि भक्ष्यकवलानि ते दास्यामि।

(ख) चटकः स्वकर्मणि व्यग्रः आसीत्।

(ग) कुक्कुरः मानुषाणां मित्रम् अस्ति।

(घ) स महतीं वैदुषीं लब्धवान्।

(ङ.) रक्षानियोगकरणात् मया न भ्रष्टव्यम् इति।

**5. 'क' स्तम्भे समस्तपदानि 'ख' स्तम्भे च तेषां विग्रहः दत्तानि, तानि यथासमक्षं लिखत।**

| क                 | ख                       |   |       |
|-------------------|-------------------------|---|-------|
| (क) दृष्टिपथम्    | (1) पुष्पाणाम् उद्यानम् | = | ..... |
| (ख) पुस्तकदासाः   | (2) विद्यायाः व्यसनी    | = | ..... |
| (ग) विद्याव्यसनी  | (3) दृष्टेः पन्थाः      | = | ..... |
| (घ) पुष्पोद्यानम् | (4) पुस्तकानां दासाः    | = | ..... |

**6. अधोलिखितेषु पदयुग्मेषु एकं विशेष्यपदम् अपरञ्च विशेषणपदम्। विशेषणपदम् विशेष्यपदं**

**च पृथक्-पृथक् चित्वा लिखत -**

|                      | विशेषणम् | विशेष्यम् |
|----------------------|----------|-----------|
| (1) खिन्नः बालः      | — .....  | .....     |
| (2) पलायमानं श्वानम् | — .....  | .....     |
| (3) प्रीतः बालकः     | — .....  | .....     |

- (4) स्वादूनि भक्ष्यकवलानि - .....  
 (5) त्वरमाणाः वयस्याः - .....

### 7. कोष्ठकगतेषु पदेषु सप्तमीविभक्तेः प्रयोगं कृत्वा रिक्तस्थानपूर्तिं कुरुत ।

- (1) बालः ..... क्रीडितुं निर्जगाम । (पाठशालागमनवेला)  
 (2) ..... जगति प्रत्येकं स्वकृत्ये निमग्नो भवति । (इदम्)  
 (3) खगः ..... नीडं करोति । (शाखा)  
 (4) अस्मिन् ..... किमर्थं पर्यटसि ? (निदाघदिवस)  
 (5) ..... हिमालयः उच्चतमः । (नग)

## योग्यताविस्तारः

क्रिया के निम्नलिखित रूपों को ध्यानपूर्वक देखें समझें व अभ्यास करें –

पठति – पढ़ता/पढ़ती है, पाठयति–पढ़ाता/पढ़ाती है, पाठयामास–पढ़ाया

यथा – सः पुस्तकं पठति ।

शिक्षकः छात्रान् पाठयति ।

आचार्यः वेदान् पाठयामास ।



इसी प्रकार कुछ अन्य रूप भी प्रस्तुत हैं—

|        |          |            |
|--------|----------|------------|
| बोधति  | बोधयति   | बोधयामास   |
| करोति  | कारयति   | कारयामास   |
| लिखति  | लेखयति   | लेखयामास   |
| गच्छति | गमयति    | गमयामास    |
| हसति   | हासयति   | हासयामास   |
| शृणोति | श्रावयति | श्रावयामास |

